موضوع الخطبة :خصائص يوم الجمعة وفضائله

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :طارق بدر السنابلي (@Ghiras_4T)

शीर्षक:

शुक्रवार की विशेषताएँ।

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ)

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا)

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا)

प्रशंसा ओं के पश्चात !

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है, सबसे उच्च मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं धर्म में अविष्कार की गई हर नई चीज़ नवोन्मेष है, हर नवोन्मेष त्रुटि है और हर त्रुटि नरक में ले जाने वाली है.

मुसलमानो! अल्लाह तआला से भय करो एवं उसका डर अपने हृदय में उत्पन्न करो, याद रखो कि अल्लाह तआला अपनी संपूर्ण

जीव-जंतुओं का पालनहार एवं रब है उसका एक दृश्य यह है कि वह जिस जीव को चाहता है सर्वोत्तम एवं उच्च स्थान वाला बना देता है; चाहे वह मनुष्य हों, स्थानें हों अथवा समय हो. इसके पीछे अल्लाह तआला की बुद्धिमत्ता होती है जिस से वही अवगत है, अल्लाह का कथन है:

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ. (القصص:68)

अर्थात: " आपका पालनहार जो चाहता है अविष्कार करता है और जिसे चाहता है चुन लेता है".

अल्लाह तआला ने मनुष्यों में से दूतों को चुना, दूतों में उच्च साहस वाले रसूलों का चयन किया जोकि नूह, इब्राहिम, मूसा, ईसा एवं मुहम्मद अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम हैं. इसके अतिरिक्त इन पांचों में से वे मित्र स्वरूप (ख़लील) चयन किए गए जो इब्राहिम और मोहम्मद अलैहिमस्सलाम हैं. इन दो मित्रों में भी मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का चयन किया गया जो संपूर्ण दूतों में सर्वोत्तम एवं सर्वश्रेष्ठ हैं. -सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम.-

अल्लाह तआला ने विशेष रुप से जिन स्थानों को सर्वोच्च बनाया उनमें से मक्का भी है जिसे अल्लाह तआला ने समस्त धरती में से चयन किया इसके पश्चात मदीना का स्थान है मस्जिद-ए-ह़राम एवं मस्जिद-ए-नबवी में पढ़ी जाने वाली नमाज़ का लाभ एवं सवाब कई गुना बढ़ा दिया.

जिन समयों का अल्लाह ने चयन किया है उनमें शुक्रवार का दिवस भी है, जो सारे दिवसों का प्रमुख है. अल्लाह ने इसे

अधिकतम विशेषताओं से वर्णित किया है एवं कुछ कारणों के आधार पर इसे उच्च स्थान प्रदान किया है, उन में से कुछ मूल कारण निम्नलिखित हैं:

(१) इस दिन उच्च स्तरीय घटनाएँ हुईं, ओस बिन ओस रज़ि अल्लाहू अन्हू रिवायत करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " तुम्हारे दिवसों में सबसे सर्वोत्तम शुक्रवार का दिवस है, इसी दिन आदम अलैहिस्सलाम को बनाया गया एवं इसी दिन उनका निधन हुआ, इसी दिन सूर फुंका जाएगा एवं इसी दिन सब पर बेहोशी प्रकट होगी .

(इसे अबू दाऊद: १०४३ ने रिवायत किया है एवं अल-बानी रहिमहुल्लाह ने सहीहु-अबी दाऊद:१०४७ में सहीह कहा है).

अबहुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू का कथन है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " सर्वश्रेष्ठ दिवस जिसमें सूर्य निकलता है शुक्रवार का दिन है, इसी दिन आदम को बनाया गया था एवं इसी दिन उन्हें स्वर्ग में प्रवेश कराया गया, और उसी दिन उन्हें उस से निकाला गया (धरती का शासन उन्हें थमाया गया.), एवं प्रलय भी शुक्रवार ही को होगा." (सहीह मुस्लिम:८५४)

(२) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह है कि यह लोगों के इकट्ठा होने एवं एक दूसरे के जन्म व मृत्यु के अनुस्मारक का दिन है, सर्वोच्च अल्लाह ने प्रत्येक समूह (उम्मत) में सप्ताह में एक विशेष दिवस का चयन किया, जिसमें उपासना के लिए वे अपने आप को मुक्ति रखते, एवं एक दूसरे को जन्म व मृत्यु,

लाभ एवं यातना का अनुस्मारक कराने हेतु इकट्ठा होते थे. इस सभा के माध्यम से वह उस महासभा को याद करते थे जो अल्लाह रब्बुल आलमीन के समक्ष आयोजित होगा. इस उद्देश्य को पूरा करने हेतु सबसे उपयुक्त दिन शुक्रवार था. इस कारणवश अल्लाह तआला ने इस समूह (मुहम्मडन) के सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ होने को ध्यान में रखते हुए इस दिवस को भंडारण रखा, इस दिन इनके इकट्ठा होने को निर्धारित किया, ताकि वे आज्ञाकारीता एवं उपासना करें और सृष्टि की बुद्धिमत्ता एवं जीवन के उद्देश का अनुस्मारक करें. इस कुछ दिनों के सांसारिक जीवन को समझें एवं उस दिन का याद करें जिस दिन आकाश एवं पृथ्वी लपेट दिए जाएंगे, एवं संपूर्ण वस्तुएं उसी परिस्थिति में आ जाएंगी जिसमें अल्लाह ने उनका आविष्कार किया था, यह अल्लाह का सत्यता पर आधारित वचन है, यही मूल कारण है कि नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम फज्र की उपासना में (अलिफ़-लाम-मीम तंज़ील)) एवं (हल अता अलल-इंसान) का सस्वर पाठ किया करते थे. क्योंकि यही वह तो अध्याय हैं जिनमें संसार के प्रारंभिक एवं अंतिम स्थितियों, जीव जंतुओं के प्रलय के मैदान में इकट्ठा होने एवं उन्हें स्वर्ग व नरक में ले जाने का उल्लेख है .

(यह इब्न-ए-क़ैय्यिम का कथन है, देखें: ज़ाद-उल-मआ़द ०१/४२१-४२२ संक्षेप एवं न्यूनतम रद्दो बदल के साथ).

(३) शुक्रवार की एक विशेषता यह भी है यह एक ऐसा त्यौहार है जो हर सप्ताह लौटकर आता है. जैसा की हदीस में आया है इब्न-ए-अब्बास रज़ि अल्लाहू अन्हूमा रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " नि: संदेह यह त्यौहार का दिन है, अल्लाह तआला ने इसे मुसलमानों के लिए त्योहार का दिन घोषित किया है, इसलिए जो कोई जुमा के लिए आए वह स्नान करके आए, एवं यदि हो सके तो सुगंधित होकर आए, एवं तुम लोग दातुन को आवश्यक रूप से अपने ऊपर प्रयोग करो".

(इसे इब्न-ए-माजा:१०९८ ने रिवायत किया है एवं शैख़ अल-बानी रहिमहुल्लाह न सहीह इब्न-ए-माजा में हसन कहा है).

(४) शुक्रवार की एक विशेषता यह भी है की अल्लाह तआला ने सर्वोच्च समूह (मुहम्मडन समाज) को यह दिवस प्रदान किया एवं उनके लिए ही भंडारण करके रखा, जोकि मोहम्मद सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम का समूह है. इनके अतिरिक्त अन्य समूहों से छुपा कर रखा. अबू हुरैरा एवं हुज़ैफ़ा रज़ि अल्लाहू अन्हूमा कहते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " जो मनुष्य हमसे पूर्व थे उन्हें शुक्रवार के पथ से हटा दिया, इस कारणवश यहूदियों के लिए शनिवार का दिन हो गया एवं नसारा के लिए रविवार का दिन. फिर अल्लाह तआला ने इस संसार में हमें लाया और शुक्रवार के दिन की ओर हमें दिशा-निर्देश दिया".

(मुस्लिम: ८५६)

(५) शुक्रवार की एक विशेषता एवं गुणवत्ता यह भी है कि इस दिन फज्र की उपासना सामूहिक रूप में करना पूरे सप्ताह उपासना करने से अधिक अच्छा है, इब्न-ए-उमर रज़ि अल्लाहू अन्हूमा कहते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " अल्लाह

के निकट संपूर्ण उपासनाओं की तुलना में शुक्रवार के दिन सामूहिक रूप में फज्र की उपासना करना अधिक अच्छा है".

(इसे बैहक़ी ने शअ़बुल-ईमान:२७८३ में रिवायत किया है एवं शैख़ अल-बानी रहिमहुल्लाह ने सहीहुल-जामे १११८, एवं अस्सहीहह:१५६६ में सहीह कहा है)

(६) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह भी है कि इस दिन फज्र की उपासना की प्रथम रकअ़त में सूरह-ए-सजदा एवं द्वितीय रकअ़त में सूरह-ए-इंसान का सस्वर पाठ करना सुन्नत है, अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू से मरवी है कि "रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शुक्रवार के दिन फज्र की उपासना की प्रथम रकअ़त में (अलिफ़-लाम्म-मीम तनज़ील) एवं द्वितीय रकअ़त में (हल अता अलल-इंसान-ए-हीनुम्मिनद्दहरि लम यकुन शैअम्मज़कूरा.) का सस्वर पाठ किया करते थे".

(बुख़ारी:८९१, मुस्लिम:८८०, उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं)

शैख़ुल-इस्लाम इब्न-ए-तैमिया रहिमहुल्लाह लिखते हैं: " रसूल सल्लल्लाहू अलेही वसल्लम शुक्रवार के दिन फज्र की उपासना में इन दिनों सूरतों का सस्वर पाठ इस कारणवश किया करते थे क्योंकि इस दिन जो कुछ हुआ एवं जो कुछ होगा उसकी सूचना इन दोनों सूरतों में दी गई है, आदम के संतान की सृष्टि, प्रलय के दिन एवं दासों के उठाए जाने का उल्लेख है, और यह सारी शुक्रवार के दिन होने वाली घटनाएँ हैं. इसलिए शुक्रवार के दिन इन सूरतों के सस्वर पाठ के माध्यम से मनुष्यों को इन घटनाओं का

अनुस्मारक कराया जाता है, जो इसी दिन घटने वाले हैं. इब्न-ए-तैमिया का कथन समाप्त हुआ .

(ज़ाद-उल-मआ़द: ०१/३७५)

(७) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह भी है कि इस दिन विशेष रूप से सूरह-ए-कहफ़ का सस्वर पाठ किया जाता है, अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहू अन्हू की मरफ़ू रिवायत है: "जो व्यक्ति शुक्रवार के दिन सूरह-ए-कहफ़ का सस्वर पाठ करता है, उसके लिए दो शुक्रवार के बीच का समय उज्जवल हो जाता है".

(इसे हाकिम ने 'अल-मुस्तदरक": ०२/३६८ में एवं बैह़क़ी: ०३/२४९ ने उन के पथों से रिवायत किया है, एवं अल-बानी ने अल-इरवा: ०३/९३ सहीह कहा है एवं प्राथमिकता इस बात को दी है कि यह अबू सईद ख़दरी रज़ि अल्लाहू अन्हू पर मौक़ूफ़ है).

(८) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह भी है इसमें एक समय पाया जाता है जिसमें प्रार्थना स्वीकार की जाती है, उस समय में अगर कोई मुस्लिम दास अल्लाह से कुछ मांगता है तो अल्लाह उसकी मांग आवश्यक रूप से पूरी करता है, सहीहैन में अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहू अन्हू से मरवी है रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "शुक्रवार के दिन एक ऐसा समय आता है कि मुस्लिम दास यदि उस समय को प्राप्त कर लेता है एवं उसमें कोई अच्छाई व भलाई की मांग कर लेता है तो अल्लाह तआला उसकी मांग आवश्यक रूप से पूरी करता है." फ़रमाया: "वह समय न्यूनतम रहता है." अर्थात: बहुत तेजी से निकल जाता है.

(इसे बुख़ारी:९५३, एवं मुस्लिम: ८५२ ने रिवायत किया और उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं)

(९) शुक्रवार की एक विशेषता यह भी है कि जिस व्यक्ति की मृत्यु शुक्रवार की रात्रि अथवा दिन में होती है तो अल्लाह उसे क़ब्र के उत्पीड़न से सुरक्षित रखता है, अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि अल्लाहू अन्हूमा कहते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: " जिस मुसलमान का शुक्रवार के दिन अथवा रात्रि में देहांत होता है अल्लाह उसे क़ब्र के उत्पीड़न से सुरक्षित रखता है".

(इसे तिर्मीज़ी:१०८० ने रिवायत किया है, एवं अल-बानी रहिमहुल्लाह ने अह़कामुल-जनाएज़: पृष्ठ: ४९-५०, लिखा है कि यह हदिस संपूर्ण स्वरूप सहीह अथवा हसन है).

(१०) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह भी है कि इस दिन शुक्रवार की उपासना की जाती है, जो कि एक सर्वश्रेष्ठ एवं महिमा वाली उपासना है, अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में विशेष स्वरुप इस उपासना हेतु पुकारने का उल्लेख किया है, अल्लाह का कथन है" :

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓاْ إِذَا نُودِىَ لِلصَّلَوٰةِ مِن يَوۡمِ ٱلۡجُمُعَةِ فَٱسۡعَوۡاْ إِلَىٰ ذِكۡرِ ٱللَّهِ وَذَرُواْ ٱلۡبَيۡعَۚ ذَٰلِكُمۡ خَيۡرٞ لَّكُمۡ إِن كُنتُمۡ تَعۡلَمُونَ. (الجمعة:09)

अर्थात: " ए वो लोगो जो ईमान लाए हो! जब शुक्रवार के दिन उपासना के लिए अज़ान दी जाए तो तुम लोग अल्लाह की याद की ओर दौड़ पड़ो, एवं की क्रिय-विक्रिय को त्याग दो, यह तुम्हारे हित में अधिक अच्छा है यदि तुम्हें ज्ञात है".

*(११) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह भी है कि इसमें दान-पुण्य करने का लाभ कई गुना बढ़ा कर दिया जाता है, अब्दुल रज़्ज़ाक ने अपनी पुस्तक "अल-मुसन्नफ़" में कअ़ब रज़ि अल्लाहू अन्हू से रिवायत किया है, वह कहते हैं: "शुक्रवार के दिन दान-पुण्य करना अन्य दिनों की तुलना में अधिक लाभदायक है." इब्न-ए-अबी शैबा ने अपनी पुस्तक "अल-मुसन्नफ़" में इन्ही से रिवायत किया है: शुक्रवार के दिन दान-पूण्य करने का लाभ कई गुना बढ़ा कर दिया जाता है".

इब्न-ए-क़ैय्यिम रहिमहुल्लाह लिखते हैं: शुक्रवार के दिन दान-पुण्य करना अन्य दिनों की तुलना में कुछ अलग है, सप्ताह के अन्य दिनों की तुलना में शुक्रवार के दिन दान-पुण्य करना ऐसे ही है जैसे वर्ष के समस्त महीनों की तुलना में रमज़ान में दान-पुण्य करना. मैंने शैख़ुल-इस्लाम इब्न-ए-तैमिया -क़द्दसल्लाहु रूहहु- को देखा जब वह शुक्रवार के दिन उपासना के लिए निकलते तो गृह में जो कुछ रोटि आदि होती उन्हें अपने साथ रख लेते एवं रास्ते में छुपा कर उनको दान कर देते. मैंने उनको कहते हुए सुना: "यदि अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रार्थना (सरगोशी व मुनाजात) से पूर्व दान-पुण्य करने का आदेश दिया है, तो अल्लाह तआला की सरगोशी व मुनाजात से पूर्व दान-पुण्य करना अधिक अच्छा है." इब्न-ए-क़ैय्यिम रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ. (ज़ाद-उल-मआ़द:४०७)

(१२) शुक्रवार के दिन की एक विशेषता यह भी है कि इसमें मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर प्रचुरता के साथ दुरूद

भेजना मुस्तह़ब है, क्योंकि इस दिन आप पर दुरूद भेजने का जो लाभ है वह अन्य कार्यों पर नहीं है, वह इस कारणवश कि मुहम्मडन समूह को इस संसार में जो भी सांसारिक एवं प्रलयिक अच्छाइयाँ व भलाईयां प्राप्त हुई हैं वो आप ही के माध्यम से प्राप्त हुई हैं, इसलिए आपका आभार एवं आपके अधिकारों का न्यूनतम पाठ यह है कि आप पर प्रचुरता के साथ दुरूद भेजा जाए, इसके अतिरिक्त आप पर दुरूद भेजने का जो अर्थ है उसे भी बुद्धि में रखा जाए, वह यह है कि आपके लिए सुंदरता पूर्वक प्रशंसा, सर्वोच्च स्थान और आकाश एवं पृथ्वी में सबसे भली चर्चा हेतु प्रार्थना करना.

शुक्रवार की ये कुछ विशेषताएं हैं जिनके कारण शुक्रवार का दिन अल्लाह एवं जीव-जंतुओं के निकट उच्च स्थान वाला एवं समस्त दिनों का प्रमुख है.

अल्लाह तआला हमें एवं आपको क़ुरआन की बरकतों से मालामाल फ़रमाए, हमें एवं आपको इसके श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाह से लाभ पहुंचाए, मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह तआला से अपने लिए एवं आप सभी के लिए क्षमा मांगता हूं आप भी उसे क्षमा चाहें, नि: संदेह वह अधिक पश्चाताप स्वीकार करने वाला एवं बहुत क्षमा करने वाला है!

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد!

आप यह भी ज्ञात रखें -अल्लाह आप पर अपनी कृपा करे- कि अल्लाह तआला ने शुक्रवार के दिन प्रचुरता के साथ रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजने का आदेश दिया है, अल्लाह का कथन है:

إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا صَلُّوا عَلَيۡهِ وَسَلِّمُوا تَسۡلِيمًا. (الأحزاب:56)

अर्थात: " अल्लाह तआला एवं उसके देवदूत उस नबी पर रहमत भेजते हैं और ए विश्वासियो! तुम भी उन पर दुरूद भेजो एवं अधिक सलाम भेजते रहा करो".

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं रसूल पर रहमत व सलामती भेज, तू उनके पश्चात आने वाले महान शासकों (ख़ुलफ़ा), समर्थकों एवं प्रलय तक शुद्धता के साथ उनकी आज्ञाकारिता करने वालों से प्रसन्न हो जा. हे अल्लाह इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं समृद्धि प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादीयों को अपमानित कर दे, तू अपने इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नष्ट कर दे एवं अपने एकेश्वरवाद की सहायता कर! हे अल्लाह! हमें अपने देशों में शांतिपूर्ण जीवन प्रदान कर, हमारे धर्म गुरुओं एवं शासकों को सुधार दे, उन्हें दिशा निर्देश का पालन करने वाला बना, उन्हें अच्छा परामर्शदाता प्रदान कर !

हे अल्लाह! मुसलमानों के साथ यह महामारी ऐसी लगी हुई है जिस से तेरे अतिरिक्त कोई भी अवगत नहीं, हे अल्लाह! तू हमसे

इस महामारी को दूर कर दे, नि: संदेह हम मुसलमान हैं, हे अल्लाह! इस महामारी के कारण जिन मुसलमानों की मृत्यु हो गई है, उन पर अपनी कृपा कर एवं जो अस्वस्थ हैं उन्हें स्वस्थ कर दे.

हे हमारे पालनहार! हमें इस संसार में भलाई एवं प्रलय में लाभ दे, एवं नरक की यातना से सुरक्षा प्रदान कर!!!

عباد الله، إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذي القربى وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي، يعظكم لعلكم تذكرون، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروه على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، والله يعلم ما تصنعون.

लेखक:

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

१९ ज़िल-क़अदह १४४१ हिजरी

जूबैल, सऊदी अ़रब

०९६६५०५९६६६१

अनुवाद:

तारिक़ बदर

binhifzurrahman@gmail.com